

अब नहीं तो कब नहीं

श्रेष्ठ राज्य भाग्य का अधिकार देने वाले बापदादा बोले-

“आज लवफुल और लाफुल बापदादा सभी बच्चों के खाते को देख रहे थे। हर एक का जमा का खाता कितना है। ब्राह्मण बनना अर्थात् खाता जमा करना। क्योंकि इस एक जन्म के जमा किये हुए खाते के प्रमाण २१ जन्म प्रालम्ब्य पाते रहेंगे। न सिर्फ २१ जन्म प्रालम्ब्य प्राप्त करेंगे लेकिन जितना पूज्य बनते हो अर्थात् राज्य पद के अधिकारी बनते हो, उसी हिसाब अनुसार आधाकल्प भक्तिमार्ग में पूजा भी राज्य भाग्य के अधिकार के हिसाब से होती है। राज्य पद श्रेष्ठ है तो पूज्य स्वरूप भी इतना ही श्रेष्ठ होता है। इतनी संख्या में प्रजा भी बनती है। प्रजा अपने राज्य अधिकारी विश्व महाराजन वा राजन को मात पिता के रूप से प्यार करती है। इतना ही भक्त आत्मायें भी ऐसे ही उस श्रेष्ठ आत्मा को वा राज्य अधिकारी महान आत्मा को अपना प्यारा ईष्ट समझ पूजा करते हैं। जो अष्ट बनते हैं वह ईष्ट भी इतने ही महान बनते हैं। इस हिसाब प्रमाण इसी ब्राह्मण जीवन में राज्य पद और पूज्य पद पाते हो। आधाकल्प राज्य पद वाले बनते हो और आधाकल्प पूज्य पद को प्राप्त करते हो। तो यह जन्म वा जीवन वा युग सारे कल्प के खाते को जमा करने का युग वा जीवन है। इसलिए आप सभी का एक सलोगन बना हुआ है, याद है? अब नहीं तो कब नहीं। यह इस समय के इसी जीवन के लिए ही गाया हुआ है। ब्राह्मणों के लिए भी यह सलोगन है तो अज्ञानी आत्माओं के लिए भी सुजाग करने का यह सलोगन है। अगर ब्राह्मण आत्मायें हर श्रेष्ठ कर्म करने के पहले श्रेष्ठ संकल्प करते हुए यह सलोगन सदा याद रखें कि अब नहीं तो कब नहीं तो क्या होगा? सदा हर श्रेष्ठ कार्य में तीव्र बन आगे बढ़ेंगे। साथ-साथ यह सलोगन सदा उमंग उत्साह दिलाने वाला है। रूहानी जागृति स्वतः ही आ जाती है। अच्छा फिर कर लेंगे, देख लेंगे। करना तो है ही। चलना तो है ही। बनना भी है ही। यह साधारण पुरुषार्थ के संकल्प स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं। क्योंकि स्मृति आ गई कि अब नहीं तो कब नहीं। जो करना है वह अब कर लो। इसको कहा जाता है-तीव्र पुरुषार्थ।

समय बदलने से कभी शुभ संकल्प भी बदल जाता है। शुभ कार्य जिस उमंग से करने का सोचा वह भी बदल जाता है। इसलिए ब्रह्मा बाप के नम्बरवन जाने की विशेषता क्या देखी? कब नहीं, लेकिन अब करना है। तुरंत दान महापुण्य कहा जाता है। अगर तुरंत दान नहीं किया, सोचा, समय लगाया, प्लैन बनाया फिर प्रैक्टिकल में लाया तो इसको तुरंत दान नहीं कहा जायेगा। दान कहा जायेगा। तुरंत दान और दान में अन्तर है। तुरंत दान महादान है। महादान का फल महान होता है। क्योंकि जब तक संकल्प को प्रैक्टिकल करने में सोचता है अच्छा करूँ, करूँगा, अभी नहीं, थोड़े समय के बाद करूँगा। अब इतना कर लेता हूँ यह सोचना और करना इस बीच में जो समय पड़ जाता है उसमें माया को चांस मिल जाता है। बापदादा बच्चों के खाते में कई बार देखते हैं कि सोचने और करने के बीच में जो समय पड़ता है उस समय में माया आ जाती है तो बात भी बदल जाती है। मानो कभी तन से, मन से सोचते हैं यह करेंगे लेकिन समय पड़ने से जो १००% सोचते हैं करने के लिए वह बदल जाता है। समय पड़ने से माया का प्रभाव होने के कारण मानो ८ घण्टा लगाने वाला ६ घण्टा लगायेगा। २ घण्टा कट हो जायेगा। सरकमस्टांस ही ऐसे बन जायेंगे। इस प्रकार धन में सोचेगा १०० करना है और करेगा ५० इतना भी फर्क पड़ जाता है। क्योंकि बीच में माया को मार्जिन मिल जाती है। फिर कई संकल्प आते हैं। अच्छा ५० अभी कर लेते हैं-५० फिर बाद में कर लेंगे। है तो बाप का ही। लेकिन तन-मन-धन सभी का जो तुरंत दान वह महापुण्य होता है। देखा है ना-बलि भी चढ़ाते हैं तो महाप्रसाद वही होता जो तुरंत होता। एक धक से झाटकू बनते हैं उसको महाप्रसाद कहा जाता है। जो बलि में चिल्लाते-चिल्लाते सोचते-सोचते रह जाते हैं वह महाप्रसाद नहीं। जैसे वह बकरे को बलि चढ़ाते हैं, वह बहुत चिल्लाता है। यहां क्या करते? सोचते हैं, ऐसा करें वा न करें। यह हुआ सोचना। चिल्लाने वाले को कभी भी तुरंत दान महापुण्य यह जो गायन है वह इस समय का है। अर्थात् सोचना और करना तुरंत हो। सोचते-सोचते रह नहीं जावें। कई बाद ऐसे अनुभव भी सुनाते हैं। सोचा तो मैंने भी यही था लेकिन इसने कर लिया, मैंने नहीं किया। तो जो कर लेता है वह पा लेता है। जो सोचते-सोचत रह जाता, वह सोचते-सोचते त्रेतायुग तक पहुँच जाता है। सोचते-सोचते रह जाता है। यही व्यर्थ संकल्प है कि तुरंत नहीं करो। शुभ कार्य शुभ संकल्प के लिए गायन है तुरंत दान महापुण्य। कभी-कभी कोई बच्चे बड़ा खेल दिखाते हैं। व्यर्थ संकल्प इतना फोर्स से आते जो कन्ट्रोल नहीं कर पाते। फिर उस समय कहते क्या करें हो गया ना। रोक नहीं सकते। जो आया वह कर लिया लेकिन व्यर्थ के लिए कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए। एक समर्थ संकल्प का फल पदमगुणा मिलता है। ऐसे ही एक व्यर्थ संकल्प का हिसाब किताब उदास होना, दिलशिकस्त होना वा खुशी गायब होना वा समझ नहीं आना कि मैं क्या हूँ, अपने को भी नहीं समझ सकते-यह भी एक का बहुत गुणा के हिसाब से अनुभव होता है। फिर सोचते हैं कि था तो कुछ नहीं। पता नहीं क्यों खुशी गुम हो गई। बात तो बड़ी नहीं थी लेकिन बहुत दिन हो गये हैं खुशी कम हो गई है। पता नहीं क्यों अकेलापन अच्छा लगता है! कहीं चले जावें, लेकिन जायेंगे कहीं? अकेला अर्थात् बिना बाप के साथ अकेला तो नहीं जाना है ना। ऐसे भले अकेले हो जाओ लेकिन बाप के साथ से अकेले कभी नहीं होना। अगर बाप के साथ से अकेले हुए, वैरागी, उदासी यह तो दूसरा

मठ है। ब्राह्मण जीवन नहीं। कम्बाइन्ड हो ना। संगमयुग कम्बाइन्ड रहने का युग है। ऐसी वन्डरपुल जोड़ी तो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। चाहे लक्ष्मी नारायण भी बन जाएं लेकिन ऐसी जोड़ी तो नहीं बनेगी ना। इसलिए संगमयुग का कम्बाइन्ड रूप है। यह सेकण्ड भी अलग नहीं हो सकता। अलग हुआ और गया। अनुभव है ना ऐसा! फिर क्या करते कभी सागर के किनारे चले जाते, कब छत पर, कब पहाड़ों पर चले जाते। मनन करने के लिए जाओ वह अलग बात है। लेकिन बाप के बिना अकेले नहीं जाना है। जहाँ भी जाओ साथ जाओ। यह ब्राह्मण जीवन का वायदा है। जन्मते ही यह वायदा किया है ना। साथ रहेंगे साथ चलेंगे। ऐसे नहीं जंगल में वा सागर में चले जाना है। नहीं। साथ रहना है साथ चलना है। यह वायदा पक्का है ना सभी का। दृढ़ संकल्प वाले सदा सफलता को पाते हैं। दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो यह वायदा भी दृढ़ पक्का किया है ना। जहाँ दृढ़ता सदा है वहाँ सफलता सदा है। दृढ़ता कम तो सफलता भी कम।

ब्रह्मा बाप की विशेषता क्या देखी! यही देखी ना तुरंत दान...कभी सोचा कि क्या होगा। पहले सोचूँ पीछे करूँ, नहीं। तुरंत दान महा पुण्य के कारण नम्बरवन महान आत्मा बनें। इसलिए देखो नम्बरवन महान आत्मा बनने के कारण कृष्ण के रूप में नम्बरवन पूजा हो रही है। एक ही यह महान आत्मा है जिसको बाल रूप में भी पूजा है। बाल रूप भी देखा है ना। और युवा रूप में राधे कृष्ण के रूप में भी पूजा है। और तीसरा गोप गोपियों के रूप में भी गायन पूजन है। चौथा लक्ष्मी नारायण के रूप में। एक यह ही महान आत्मा है जिसके भिन्न-भिन्न आयु के रूप में भिन्न-भिन्न चरित्र के रूप में गायन और पूजन है। राधे का गायन है लेकिन राधे को बाल रूप में कभी झूला नहीं झुलायेंगे। कृष्ण को झुलाते हैं। प्यार कृष्ण को करते हैं। राधे का साथ के कारण नाम जरूर है। फिर भी नम्बर दो और एक में फर्क तो होगा ना। तो नम्बरवन बनने का कारण क्या बना? महा पुण्य। महान पुण्य आत्मा सो महान पूज्य आत्मा बन गई। पहले भी सुनाया था ना आप लोगों की पूजा में भी अन्तर होगा। कोई देवी देवताओं की पूजा विधिपूर्वक होती है और कोई की ऐसे काम चलाऊ भी होती है। इसका तो फिर बहुत विस्तार है। पूजा का भी बहुत विस्तार है। लेकिन आज तो सभी के जमा के खाते देख रहे थे। ज्ञान का खजाना, शक्तियों का खजाना, श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना कहाँ तक जमा किया है और समय का खजाना कहाँ तक जमा किया है। यह चारों ही खजाने कहाँ तक जमा किये हैं। यह खाता देख रहे थे। तो अभी इन चारों ही बातों का खाता अपना चेक करना। फिर बापदादा भी सुनायेंगे कि रिजल्ट क्या देखी और हर एक खजाने के जमा करने का प्राप्ति का क्या सम्बन्ध है। और कैसे जमा करना है इस सब बातों पर फिर सुनायेंगे। समझा-

समय तो हद का है ना। आते भी हद में हैं, अपना शरीर भी नहीं। लोन लिया हुआ शरीर और है भी टैम्पेरी पार्ट का शरीर। इसलिए समय को भी देखना पड़ता है। बापदादा को भी हर बच्चे से मिलने में, हर बच्चे की मीठी-मीठी रूहानी खुशबू लेने में मजा आता है। बापदादा तो हर बच्चे के तीनों काल जानते हैं ना। और बच्चे सिर्फ अपने वर्तमान को ज्यादा जानते हैं इसलिए कभी कैसे, कभी कैसे हो जाते हैं। लेकिन बापदादा तीनों कालों को जानने कारण उसी दृष्टि से देखते हैं कि यह कल्प पहले वाला हकदार है। अधिकारी है। अभी सिर्फ थोड़ा सा कोई हलचल में है लेकिन अभी-अभी हलचल अभी-अभी अचल हो ही जाना है। भविष्य श्रेष्ठ देखते हैं। इसलिए वर्तमान को देखते भी नहीं देखते। तो हर एक बच्चे की विशेषता को देखते हैं। ऐसा कोई है जिसमें कोई भी विशेषता न हो! पहली विशेषता तो यही है जो यहाँ पहुँचे हो। और कुछ भी न हो फिर भी सम्मुख मिलने का यह भाग्य कम नहीं है। यह तो विशेषता है ना। यह विशेष आत्माओं की सभा है। इसलिए विशेष आत्माओं की विशेषता को बापदादा देख हर्षित होते हैं। अच्छा-सदा तुरंत दान महापुण्य के श्रेष्ठ संकल्प वाले, सदा कब को अब में परिवर्तन करने वाले, सदा समय के वरदान को जान वरदानों से झोली भरने वाले, सदा ब्रह्मा बाप को फालो कर ब्रह्मा बाप के साथ श्रेष्ठ राज्य अधिकारी और श्रेष्ठ पद अधिकारी बनने वाले, सदा बाप के साथ कम्बाइन्ड रहने वाले, ऐसे सदा के साथी बच्चों को, सदा साथ निभाने वाले बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।”

बृजइन्द्र दादी से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

चलाने वाला चला रहा है ना। हर सेकण्ड करावनहार निमित्त बनाए करा रहा है। करावनहार के हाथ में चाबी है। उसी चाबी से चल रही है। आटोमेटिक चाबी मिल जाती है और चलते फिरते कितना न्यारे और प्यारेपन का अनुभव होता है। चाहे कर्म का हिसाब चुकतू भी कर रहे हैं लेकिन कर्म के हिसाब को भी साक्षी हो देखते हुए साथी के साथ मौज में रहते हैं। ऐसे है ना! आप तो साथी के साथ मौज में हैं बाकी यह हिसाब किताब साक्षी हो चुकतू कैसे हो रहा है वह देखते हुए भी मौज में रहने कारण लगता कुछ नहीं है। क्योंकि जो आदि से स्थापना के निमित्त बने हैं तो जब तक है तब तक बैठे हैं या चल रहे हैं, स्टेज पर हैं या घर में हैं लेकिन महावीर बच्चे सदा ही अपने श्रेष्ठ स्टेज पर होने के कारण सेवा की स्टेज पर हैं। डबल स्टेज पर हैं। एक स्वयं की श्रेष्ठ स्टेज पर हैं और दूसरी सेवा की स्टेज पर हैं। तो सारा दिन कहाँ रहती हो? मकान में या स्टेज पर? बेड पर बैठती, कोच पर बैठती हो या स्टेज पर रहती हो? कहाँ भी हो लेकिन सेवा की स्टेज पर हो। डबल स्टेज है। ऐसे ही अनुभव होता है ना। अपने हिसाब को भी आप साक्षी होकर देखो। इस शरीर से जो भी पिछला किया हुआ है वह चुकतू कैसे कर रहा है, वह साक्षी होकर देखते। इसे कर्मभोग नहीं

कहेंगे। भोगने में दुख होता है। तो भोगना शब्द नहीं कहेंगे क्योंकि दुखदर्द की महसूसता नहीं है। आप लोगों के लिए कर्मभोग नहीं है, यह भी कर्मयोग की शक्ति से सेवा का साधन बना हुआ है। यह कर्म भोगना नहीं सेवा की योजना है। भोगना भी सेवा की योजना में बदल गई। ऐसे है ना! इसलिए सदा साथ की मौज में रहने वाली। जन्म से यही आशा रही साथ रहने की। यह आशा भक्ति रूप में पूरी हुई, ज्ञान में भी पूरी हुई, साकार रूप में भी पूरी हुई और अभी अव्यक्त रूप में भी पूरी हो रही है। तो यह जन्म की आशा वरदान के रूप में बन गई। अच्छा-जितना साकार बाप के साथ रहने का अनुभव इनका है उतना और किसका नहीं। साथ रहने का विशेष पार्ट मिला यह कम थोड़े ही है। हरेक का भाग्य अपना-अपना है। आप भी कहो वाह रे मैं! अच्छा-

आदि रत्न सदा सन शोज़ फादर करने के निमित्त हैं। हर कर्म से बाप के चरित्र को प्रत्यक्ष करने वाले दिव्य दर्पण हैं। दर्पण कितना आवश्यक होता है। अपना दर्शन या दूसरे का दर्शन कराने के लिए। तो आप सभी दर्पण हो बाप का साक्षात्कार कराने के लिए। जो विशेष आत्मायें निमित्त हैं उनको देख सभी को क्या याद आता है? बापदादा याद आ जाता है। बाप क्या करते थे, कैसे चलते थे... यह याद आता है ना। तो बाप को प्रत्यक्ष करने के दर्पण हो। बापदादा ऐसे विशेष बच्चों को सदा अपने से भी आगे बढ़ाते हैं। सिर का ताज बना देते हैं। सिर के ताज की चमकती हुई मणी हो। अच्छा-

सभी बच्चों को विदाई के समय यादप्यार देते हुए

बापदादा चारों तरफ के सभी बच्चों को यादप्यार भेज रहे हैं। हर एक स्थान के स्नेही बच्चे स्नेह से सेवा में आगे बढ़ रहे हैं और स्नेह सदा आगे बढ़ता रहेगा। स्नेह से सेवा करते हो इसलिए जिन्होंने की सेवा करते हो वह भी बाप के स्नेही बन जाते हैं। सभी बच्चों को सेवा की मुबारक भी हो और मेहनत नहीं लेकिन मुहब्बत की मुबारक हो। क्योंकि नाम मेहनत है लेकिन है मुहब्बत। इसलिए जो याद में रहकर सेवा करते हैं वह अपना वर्तमान और भविष्य जमा करते हैं। इसलिए अभी भी सेवा की खुशी मिलती है और भविष्य में भी जमा होता है। सेवा नहीं की लेकिन अविनाशी बैंक में अपना खाता जमा किया। थोड़ी सी सेवा और सदाकाल के लिए खाता जमा हो जाता। तो वह सेवा क्या हुई? जमा हुआ ना! इसलिए सभी बच्चों को बापदादा यादप्यार भेज रहे हैं। हरेक अपने को समर्थ आत्मा समझ आगे बढ़ो तो समर्थ आत्माओं की सफलता सदा है ही। हरेक अपने-अपने नाम से विशेष यादप्यार स्वीकार करना (देहली पाण्डव भवन में टैलेक्स लगा है) देहली निवासी पाण्डव भवन के सभी बच्चों को विशेष सेवा की मुबारक। क्योंकि यह साधन भी सेवा के लिए ही बने हैं। साधन की मुबारक नहीं। सेवा की मुबारक हो। सदा इस साधनों द्वारा बेहद की सेवा, अविनाशी करते रहेंगे। खुशी-खुशी से विश्व में इस साधन द्वारा बाप का सन्देश पहुँचाते रहेंगे। इसलिए बापदादा देख रहे हैं कि बच्चों की सेवा का उमंग उत्साह खुशी कितनी है। इसी खुशी से सदा आगे बढ़ते रहना। पाण्डव भवन के लिए सभी विदेशी खुशी का सर्टीफिकेट देते हैं इसको कहा जाता है बाप समान मेहमाननिवाजी में सदा आगे रहना। जैसे ब्रह्मा बाप ने कितनी मेहमान निवाजी करके दिखाई। तो मेहमान निवाजी में फालो करने वाले बाप का शो करते हैं। बाप का नाम प्रत्यक्ष करते हैं। इसलिए बापदादा सभी की तरफ से यादप्यार दे रहे हैं।

अमृतबेले ६ बजे बापदादा ने फिर से मुरली चलाई तथा यादप्यार दी २५-३-८५

आज के दिन सदा अपने को डबल लाइट समझ उड़ती कला का अनुभव करते रहना। कर्मयोगी का पार्ट बजाते भी कर्म और योग का बैलेन्स चेक करना कि कर्म और याद अर्थात् योग दोनों ही शक्तिशाली रहे? अगर कर्म शक्तिशाली रहा और याद कम रही तो बैलेन्स नहीं। और याद शक्तिशाली रही और कर्म शक्तिशाली नहीं तो भी बैलेन्स नहीं। तो कर्म और याद का बैलेन्स रखते रहना। सारा दिन इसी श्रेष्ठ स्थिति में रहने से अपनी कर्मातीत अवस्था के नजदीक आने का अनुभव करेंगे। सारा दिन कर्मातीत स्थिति वा अव्यक्त फरिश्ते स्वरूप स्थिति में चलते फिरते रहना। औन नीचे की स्थिति में नहीं आना। आज नीचे नहीं आना, ऊपर ही रहना। अगर कोई कमजोरी से नीचे आ भी जाए तो एक दो को स्मृति दिलाए समर्थ बनाए सभी ऊंची स्थिति का अनुभव करना। यह आज की पढ़ाई का होम वर्क है। होम वर्क ज्यादा है, पढ़ाई कम है। ऐसे सदा बाप को फालो करने वाले सदा बाप समान बनने के लक्ष्य को धारण कर आगे बढ़ने वाले उड़ती कला के अनुभवी बच्चों को बापदादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार और गुडमार्निंग।

प्रश्न-सदा डबल लाइट स्थिति का अनुभव कैसे करें?

उत्तर- बाप का बनना अर्थात् डबल लाइट बनना। क्योंकि बाप के बनते ही सब बोझ बाप को दे दिया। सदा बाप के हो ना! सब कुछ बाप को दे दिया। तन-मन-धन-सम्बन्ध सब कुछ सरेन्डर कर दिया। फिर बोझ काहे का। अभी यही याद रखना-जब सब कुछ बाप का हो गया तो सदा डबल लाइट बन गये। अच्छा-

कर्मातीत अवस्था

सदा कर्मातीत शिव बाबा अपने न्यारे और प्यारे बच्चों प्रति बोले-

“आज बापदादा चारों ओर के बच्चों को विशेष देखने लिए चक्कर लगाने गये। जैसे भक्ति मार्ग में आप सभी ने बहुत बार परि-
क्रमा लगाई। तो बापदादा ने भी आज चारों ओर के सच्चे ब्राह्मणों के स्थानों की परिक्रमा लगाई। सभी बच्चों के स्थान भी देखे और
स्थिति भी देखी। स्थान भिन्न-भिन्न विधिपूर्वक सजे हुए थे। कोई स्थूल साधनों से आकर्षण करने वाले थे, कोई तपस्या के वायब्रे-
शन से आकर्षण करने वाले थे। कोई त्याग और श्रेष्ठ भाग्य अर्थात् सादगी और श्रेष्ठता इस वायुमण्डल से आकर्षण करने वाले थे।
कोई-कोई साधारण स्वरूप में भी दिखाई दिये। सभी ईश्वरीय याद के स्थान भिन्न-भिन्न रूप के देखे। स्थिति क्या देखी? इसमें भी
भिन्न-भिन्न प्रकार के ब्राह्मण बच्चों की स्थिति देखी। समय प्रमाण बच्चों की तैयारी कहाँ तक है, यह देखने के लिए ब्रह्मा बाप गये
थे। ब्रह्मा बाप बोले-बच्चे सर्व बंधनों से बंधनमुक्त, योगयुक्त, जीवनमुक्त एवररेडी हैं। सिर्फ समय का इन्तजार है। ऐसे तैयार हैं?
इन्तजाम हो गया है सिर्फ समय का इन्तजार है? बापदादा की रूह-रूहान चली। शिव बाप बोले चक्कर लगाके देखा तो बंधनमुक्त
कहाँ तक बने हैं! योगयुक्त कहाँ तक बने हैं! क्योंकि बंधनमुक्त आत्मा ही जीवनमुक्त का अनुभव कर सकती है। कोई भी हृद का
सहारा नहीं। अर्थात् बंधनों से किनारा है। अगर किसी भी प्रकार का छोटा बड़ा स्थूल वा सूक्ष्म मंसा से वा कर्म से हृद का कोई भी
सहारा है तो बंधनों से किनारा नहीं हो सकता। तो यह दिखाने के लिए ब्रह्मा बाप को आज विशेष सैर कराया। क्या देखा?
मैजारटी बड़े-बड़े बंधनों से मुक्त हैं। जो स्पष्ट दिखाई देने वाले बंधन हैं वा रस्सियाँ हैं उससे तो किनारा कर लिया है। लेकिन अभी
कोई-कोई ऐसे अति सूक्ष्म बंधन वा रस्सियाँ रही हुई हैं जिसको महीन बुद्धि के सिवाए देख वा जान भी नहीं सकते हैं। जैसे आज-
कल के साइंस वाले सूक्ष्म वस्तुओं को पावरफुल ग्लास द्वारा देख सकते हैं। साधारण रीति से नहीं देख सकते। ऐसे सूक्ष्म परखने
की शक्ति द्वारा उन सूक्ष्म बंधनों को देख सकते वा महीन बुद्धि द्वारा जान सकते हैं। अगर ऊपर-ऊपर के रूप से देखे तो न देखने
वा जानने के कारण वह अपने को बंधनमुक्त ही समझते रहते हैं। ब्रह्मा बाप ने ऐसे सूक्ष्म सहारे चेक किये। सबसे ज्यादा सहारा दो
प्रकार का देखा-

एक अति सूक्ष्म स्वरूप किसी न किसी सेवा के साथी का सूक्ष्म सहारा देखे। इसमें भी अनेक प्रकार देखे। सेवा के सहयोगी होने के
कारण, सेवा में वृद्धि करने के निमित्त बने हुए होने के कारण या विशेष कोई विशेषता, विशेष गुण होने के कारण, विशेष कोई
संस्कार मिलने के कारण वा समय प्रति समय कोई एकस्ट्रा मदद देने के कारण, ऐसे कारणों से रूप सेवा का साथी है, सहयोगी है
लेकिन विशेष झुकाव होने के कारण सूक्ष्म लगाव का रूप बनता जाता है। इसका परिणाम क्या होता है, यह भूल जाते हैं कि यह
बाप की देन है। समझते हैं यह बहुत अच्छा सहयोगी है। अच्छा विशेषता स्वरूप है। गुणवान है। लेकिन समय प्रति समय बाप ने
ऐसा अच्छा बनाया है, यह भूल जाता है। संकल्प मात्र भी किसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव है तो वह झुकाव सहारा बन जाता
है। तो साकार रूप में सहयोगी होने के कारण समय पर बाप के बदले पहले वह याद आयेगा। दो चार मिनट भी अगर स्थूल सहारा
स्मृति में आया तो बाप का सहारा उस समय याद होगा? दूसरी बात अगर दो चार मिनट के लिए भी याद की यात्रा का लिंक टूट
गया तो टूटने के बाद जोड़ने की फिर मेहनत करनी पड़ेगी। क्योंकि निरन्तर में अन्तर पड़ गया ना! दिल में दिलाराम के बदले और
किसी की तरफ किसी भी कारण से दिल का झुकाव होता है। इससे बात करना अच्छा लगता है। इससे बैठना अच्छा लगता है
“इसी से ही”, शब्द माना दाल में काला है। “इसी से ही” का ख्याल आना माना हीनता आई। ऐसे तो सब अच्छे लगते हैं लेकिन
इससे ज्यादा अच्छा लगता है! सबसे रूहानी स्नेह रखना, बोलना या सेवा में सहयोग लेना वा देना वह दूसरी बात है। विशेषता
देखो, गुण देखो लेकिन इसी का ही यह गुण बहुत अच्छा है, यह बीच में न लाओ। यह “ही” शब्द गड़बड़ करता है। इसको ही
लगाव कहा जाता है। फिर चाहे बाहर का रूप सेवा हो, ज्ञान हो, योग हो, लेकिन जब इसी से “ही” योग करना है, इसका ही योग
अच्छा है! यह “ही” शब्द नहीं आना चाहिए। ये ही सेवा में सहयोगी हो सकता है। ये ही साथी चाहिए...तो समझा लगाव की
निशानी क्या है! इसलिए यह “ही” निकाल दो। सभी अच्छे हैं। विशेषता देखो। सहयोगी बनो भी, बनाओ भी लेकिन पहले थोड़ा
होता है फिर बढ़ते-बढ़ते विकराल रूप हो जाता है। फिर खुद ही उससे निकलना चाहते तो निकल नहीं सकते। क्योंकि पक्का धागा
हो जाता है। पहले बहुत सूक्ष्म होता फिर पक्का हो जाता है तो टूटना मुश्किल हो जाता। सहारा एक बाप है। कोई मनुष्य आत्मा
सहारा नहीं है। बाप किसको भी सहयोगी निमित्त बनाता है लेकिन बनाने वाले को नहीं भूलो। बाप ने बनाया है। बाप बीच में आने से
जहाँ बाप होगा वहाँ पाप नहीं! बाप बीच से निकल जाता तो पाप होता है। तो एक बात है यह सहारे की।

दूसरी बात-कोई न कोई साकार साधनों को सहारा बनाया है। साधन हैं तो सेवा है। साधन में थोड़ा नीचे ऊपर हुआ तो सेवा भी नीचे
ऊपर हुई। साधनों को कार्य में लगाना वह अलग बात है। लेकिन साधनों के वश हो सेवा करना यह है साधनों को सहारा बनाना।
साधन सेवा की वृद्धि के लिए है। इसलिए उन साधनों को उसी प्रमाण कार्य में लाओ। साधनों को आधार नहीं बनाओ। आधार एक

बाप है। साधन तो विनाशी हैं। विनाशी साधनों को आधार बनाना अर्थात् जैसे साधन विनाशी हैं वैसे स्थिति भी कभी बहुत ऊंची कभी बीच की, कभी नीचे की बदलती रहेगी। अविनाशी एकरस स्थिति नहीं रहेगी। तो दूसरी बात-विनाशी साधनों को सहारा, आधार नहीं समझो। यह निमित्त मात्र है। सेवा के प्रति है। सेवा अर्थ कार्य में लगाया और न्यारे। साधनों के आकर्षण में मन आकर्षित नहीं होना चाहिए। तो यह दो प्रकार के सहारे सूक्ष्म रूप में आधार बना हुआ देखा। जब कर्मातीत अवस्था होनी है तो हर व्यक्ति, वस्तु, कर्म के बन्धन से अतीत होना, न्यारा होना इसको ही कर्मातीत अवस्था कहते हैं। कर्मातीत माना कर्म से न्यारा हो जाना नहीं। कर्म के बन्धनों से न्यारा। न्यारा बनकर कर्म करना अर्थात् कर्म से न्यारे। कर्मातीत अवस्था अर्थात् बंधनमुक्त, योग-युक्त, जीवनमुक्त अवस्था!

और विशेष बात यह देखी कि समय प्रति समय परखने की शक्ति में कई बच्चे कमजोर हो जाते हैं। परख नहीं सकते हैं। इसलिए धोखा खा लेते हैं। परखने की शक्ति कमजोर होने का कारण है बुद्धि की लगन एकाग्र नहीं है। जहाँ एकाग्रता है वहाँ परखने की शक्ति स्वतः ही बढ़ती है। एकाग्रता अर्थात् एक बाप के साथ सदा लगन में मगन रहना। एकाग्रता की निशानी सदा उड़ती कला के अनुभूति की एकरस स्थिति होगी। एकरस का अर्थ यह नहीं कि वही रफ्तार हो तो एकरस है। एकरस अर्थात् सदा उड़ती कला की महसूसता रहे। इसमें एकरस। जो कल था उससे आज परसेन्टेज में वृद्धि का अनुभव करें। इसको कहा जाता है उड़ती कला। तो स्व उन्नति के लिए, सेवा की उन्नति के लिए परखने की शक्ति बहुत आवश्यक है। परखने की शक्ति कमजोर होने के कारण अपनी कमजोरी को कमजोरी नहीं समझते हैं। और ही अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए या सिद्ध करेंगे या जिद्द करेंगे। यह तो बातें छिपाने का विशेष साधन हैं। अन्दर में कभी महसूस भी होगा लेकिन फिर भी पूरी परखने की शक्ति न होने के कारण अपने को सदा राइट और होशियार सिद्ध करेंगे। समझा! कर्मातीत तो बनना है ना। नम्बर तो लेना है ना। इसलिए चेक करो। अच्छी तरह से-योगयुक्त बन परखने की शक्ति धारण करो। एकाग्र बुद्धि बन करके फिर चेक करो। तो जो भी सूक्ष्म कमी होगी वह स्पष्ट रूप में दिखाई देगी। ऐसा न हो जो आप समझो मैं बहुत राइट, बहुत अच्छी चल रही हूँ। कर्मातीत मैं ही बनूँगी और जब समय आवे तो यह सूक्ष्म बंधन उड़ने न देवें। अपनी तरफ खींच लेवें। फिर समय पर क्या करेंगे? बंधा हुआ व्यक्ति अगर उड़ना चाहे तो उड़ेगा वा नीचे आ जोयगा! तो यह सूक्ष्म बंधन समय पर नम्बर लेने में वा साथ चलने में वा एवररेडी बनने में बंधन न बन जाएं। इसलिए ब्रह्मा बाप चेक कर रहे थे। जिसको यह सहारे समझते हैं वह सहारा नहीं हैं लेकिन यह रायल धागा है। जैसे सोनी हिरण का मिसाल है ना। सीता को कहाँ ले गया! तो सोना हिरण यह बंधन है। इसको सोना समझना माना अपने श्रेष्ठ भाग्य को खोना। सोना नहीं है खोना है। राम को खोया, अशोक वाटिका को खोया।

ब्रह्मा बाप का बच्चों से विशेष प्यार है इसलिए ब्रह्मा बाप सदा बच्चों को अपने समान एवररेडी बंधनमुक्त देखने चाहते हैं। बंधन-मुक्त का ही नजारा देखा ना! कितने में एवररेडी हुआ! किसी के बंधन में बंधा! कोई याद आया कि फलानी कहाँ है! फलानी सेवा की साथी है। याद आया? तो एवररेडी का पार्ट कर्मातीत स्टेज का पार्ट देखा ना! जितना ही बच्चों से अति प्यार रहा उतना ही प्यारा और न्यारा देखा ना! बुलावा आया और गया। नहीं तो सबसे ज्यादा बच्चों से प्यार ब्रह्मा का रहा ना! जितना प्यारा उतना न्यारा। किनारा करना देख लिया ना। कोई भी चीज़ अथवा भोजन जब तैयार हो जाता है तो किनारा छोड़ देता है ना! तो सम्पूर्ण होना अर्थात् किनारा छोड़ना। किनारा छोड़ना माना किनारे हो गये। सहारा एक ही अविनाशी सहारा है। न व्यक्ति को, न वैभव वा वस्तु को सहारा बनाओ। इसको ही कहते हैं-कर्मातीत। छिपाओ कभी नहीं। छिपाने से और वृद्धि को पाता जाता है। बात बड़ी नहीं होती। लेकिन जितना छिपाते हैं उतना बात को बड़ा करते हैं। जितना अपने को राइट सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं उतना बात को बढ़ाते हैं। जितना जिद्द करते हैं उतना बात बढ़ाते हैं। इसलिए बात को बड़ा न कर छोटे रूप से ही समाप्त करो। तो सहज होगा और खुशी होगी। यह बात हुई, यह भी पार किया, इसमें भी विजयी बने तो यह खुशी होगी। समझा! विदेशी कर्मातीत अवस्था को पाने वाले उमंग उत्साह वाले हैं ना! तो डबल विदशी बच्चों को ब्रह्मा बाप विशेष सूक्ष्म पालना दे रहे हैं। यह प्यार की पालना है। क्योंकि ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को विशेष आह्वान से पैदा किया। ब्रह्मा के संकल्प से आप पैदा हुए हो। कहते हैं ना-ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची। ब्रह्मा के संकल्प से यह ब्राह्मणों की इतनी सृष्टि रच गई ना। तो ब्रह्मा के संकल्प से आह्वान से रची हुई विशेष आत्मायें हो। लाडले हो गये ना। ब्रह्मा बाप समझते हैं कि यह फास्ट पुरुषार्थ कर फर्स्ट आने के उमंग उत्साह वाले हैं। विदेशी बच्चों की विशेषताओं से विशेष श्रृंगार करने की बातें चल रही हैं। प्रश्न भी करेंगे, फिर भी समझेंगे भी जल्दी, विशेष समझदार हो। इसलिए बाप अपने समान सब बंधनों से न्यारे और प्यारे बनने के लिए इशारा दे रहे हैं। सभी बच्चों को बता रहे हैं। बाप के आगे सदा सभी ब्राह्मण बच्चे चाहे देश के चाहे विदेश के सब हैं। अच्छा-आज रूह-रूहाण कर रहे हैं। सुनाया ना-अगले वर्ष से इस वर्ष की रिजल्ट बहुत अच्छी है। इससे सिद्ध है वृद्धि को पाने वाले हैं। उड़ती कला में जाने वाली आत्मायें हो। जिसको योग्य देखा जाता है उनको सम्पूर्ण योगी बनाने का इशारा दिया जाता है। अच्छा-

सदा कर्मबंधन मुक्त, योगयुक्त आत्माओं को सदा एक बाप को सहारा बनाने वाले बच्चों को सदा सूक्ष्म कमजोरियों से भी किनारा

करने वाले बच्चों को सदा एकाग्रता द्वारा परखने के शक्तिशाली बच्चों को, सदा व्यक्ति वा वस्तु के विनाशी सहारे से किनारे करने वाले बच्चों को ऐसे बाप समान जीवनमुक्त कर्मातीत स्थिति में स्थित रहने वाले विशेष बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते!”

निर्मलशान्ता दादी से-सदा बाप के साथ रहने वाले तो हैं ही। जो आदि से बाप के संग-संग चल रहे हैं, उन्हीं का सदा साथ का कभी भी अनुभव कम हो नहीं सकता। बचपन का वायदा है। तो सदा साथ हैं और सदा साथ चलेंगे। तो सदा साथ का वायदा कहे या वरदान कहे, मिला हुआ है। फिर भी जैसे बाप प्रीति की रीति निभाने अव्यक्त से व्यक्त रूप में आते हैं वैसे बच्चे भी प्रीति की रीति निभाने के लिए पहुँच जाते हैं। ऐसे है ना! संकल्प में तो क्या लेकिन स्वप्न में भी, जिसको सबकानशियस कहते हैं... उस स्थिति में भी बाप का साथ कभी छूट नहीं सकता। इतना पक्का सम्बन्ध जुटा हुआ है। कितने जन्मों का सम्बन्ध है। पूरे कल्प का है। सम्बन्ध इस जन्म के हिसाब से पूरा कल्प ही रहेगा। यह तो अन्तिम जन्म में कोई-कोई बच्चे सेवा के लिए कहाँ-कहाँ बिखर गये हैं। जैसे यह लोग विदेश में पहुँच गये, आप लोग सिन्ध में पहुँच गये। कोई कहाँ पहुँचे, कोई कहाँ पहुँचे। अगर यह विदेश में नहीं पहुँचते तो इतने सेन्टर कैसे खुलते। अच्छा-सदा साथ रहने वाली, साथ का वायदा निभाने वाली परदादी हो! बापदादा बच्चों के सेवा का उमंग उत्साह देख खुश होते हैं। वरदानी आत्मायें बनी हो। अभी से देखो भीड़ लगने शुरू हो गई है। जब और वृद्धि होगी तो कितनी भीड़ होगी। यह वरदानी रूप की विशेषता की नींव पड़ रही है। जब भीड़ हो जायेगी फिर क्या करेंगे। वरदान देंगे, दृष्टि देंगे। यहाँ से ही चैतन्य मूर्तियाँ प्रसिद्ध होंगी। जैसे शुरू में आप लोगों को सब देवियाँ-देवियाँ कहते थे...अन्त में भी पहचान कर देवियाँ-देवियाँ करेंगे। जय देवी, जय देवी यहाँ से ही शुरू हो जायेगा। अच्छा-

जगदीश भाई से-जो बाप से वरदान में विशेषतायें मिली हैं, उन्हीं विशेषताओं को कार्य में लाते हुए सदा वृद्धि को प्राप्त करते रहते हो। अच्छा है! संजय ने क्या किया था? सभी को दृष्टि दी थी ना! तो यह नालेज की दृष्टि दे रहे हो। यही दिव्य दृष्टि है, नालेज ही दिव्य है ना। नालेज की दृष्टि सबसे शक्तिशाली है, यह भी वरदान है। नहीं तो इतनी बड़ी विश्व विद्यालय का क्या नालेज है उसका पता कैसे चलता। सुनते तो बहुत कम है ना! लिटरेचर द्वारा स्पष्ट हो जाता है। यह भी एक वरदान मिला हुआ है। यह भी एक विशेष आत्मा की विशेषता है। हर संस्था की सब साधनों से विशेषता प्रसिद्ध होती है। जैसे भाषणों से, सम्मेलनों से, ऐसे ही यह लिटरेचर, चित्र जो भी साधन हैं, यह भी संस्था या विश्वविद्यालय की एक विशेषता को प्रसिद्ध करने का साधन हैं। यह भी तीर है जैसे तीर पंछी को ले आता है ना-ऐसे यह भी एक तीर है जो आत्माओं को समीप ले आता है। यह भी ड्रामा में पार्ट मिला है। लोगों के क्वेश्चन तो बहुत उठते हैं, जो क्वेश्चन उठते हैं-उसके स्पष्टीकरण का साधन जरूरी है। जैसे सम्मुख भी सुनाते हैं लेकिन यह लिटरेचर भी अच्छा साधन है। यह भी जरूरी है। शुरू से देखो ब्रह्मा बाप ने कितनी रूची से यह साधन बनाये। दिन रात स्वयं बैठकर लिखते थे ना। कार्ड बना बनाकर आप लोगों को देते रहे ना-आप लोग उसे रत्न जड़ित करते रहे। तो यह भी करके दिखाया ना। तो यह भी साधन अच्छे हैं। कानफ्रेन्स के पीछे पीठ करने के लिए यह जो (चार्टर आदि) निकालते हो यह भी जरूरी है। पीठ करने का कोई साधन जरूर चाहिए। पहले का यह है, दूसरे का यह है, तीसरे का यह है। इससे वह लोग भी समझते हैं कि बहुत कायदे प्रमाण यह विश्वविद्यालय वा युनिवर्सिटी है। तो यह अच्छे साधन हैं। मेहनत करते हो तो उसमें बल भर ही जाता है। अभी गोल्डन जुबली के प्लैन बनायेंगे फिर मनायेंगे। जितने प्लैन करेंगे उतना बल भरता जायेगा। सभी के सहयोग से सभी के उमंग उत्साह के संकल्प से सफलता तो हुई पड़ी है। सिर्फ रिपीट करना है। अभी तो गोल्डन जुबली का बहुत सोच रहे हैं ना। पहले बड़ा लगता है फिर बहुत सहज हो जाता है। तो सहज सफलता है ही। सफलता हरेक के मस्तक पर लिखी हुई है।

पार्टियों से-सदा डबल लाइट हो? किसी भी बात में स्वयं को कभी भी भारी न बनाओ। सदा डबल लाइट रहने से संगमयुग के सुख के दिन रूहानी मौजों के दिन सफल होंगे। अगर जरा भी बोझ धारण किया तो क्या होगा? मूँझ होगी या मौज? भारीपन है तो मूँझ है। हल्कापन है तो मौज है! संगमयुग का एक-एक दिन कितना वैल्युबुल है, कितना महान है, कितना कमाई करने का समय है, ऐसे कमाई के समय को सफल करते चलो। राजयुक्त और योगयुक्त आत्मायें सदा उड़ती कला का अनुभव करती हैं। तो खूब याद में रहो, पढ़ाई में, सेवा में आगे जाओ। रूकने वाले नहीं। पढ़ाई और पढ़ाने वाला सदा साथ रहे। राजयुक्त और योगयुक्त आत्मायें सदा ही आगे हैं। बाप के जो भी इशारे मिलते हैं उसमें संगठित रूप से आगे बढ़ते रहो। जो भी निमित्त बनी हुई विशेष आत्मायें हैं उन्हीं की विशेषताओं को, धारणाओं को कैच कर, उन्हें फालो करते आगे बढ़ते चलो। जितना बाप के समीप उतना परिवार के समीप। अगर परिवार के समीप नहीं होंगे तो माला में नहीं आयेंगे। अच्छा-

तीन-तीन बातों का पाठ

बापदादा के विदाई के दिन अनमोल महावाक्य-

“आज बापदादा अपने सदा के साथी बच्चों से मिलने आये हैं। बच्चे ही बाप के सदा साथी हैं, सहयोगी हैं, क्योंकि अति स्नेही हैं। जहाँ स्नेह होता है उसके ही सदा सहयोगी साथी बनते हैं। तो स्नेही बच्चे होने कारण बाप बच्चों के बिना कोई कार्य कर नहीं सकते। और बच्चे बाप के सिवाए कोई कार्य कर नहीं सकते। इसलिए स्थापना के आदि से बाप ने ब्रह्मा के साथ ब्राह्मण बच्चे रचे। अकेला ब्रह्मा नहीं। ब्रह्मा के साथ ब्राह्मण बच्चे भी पैदा हुए। क्यों? बच्चे सहयोगी साथी क्यों हैं। इसलिए जब बाप की जयन्ती मनाते हो तो साथ में क्या कहते हो? शिव जयन्ती सो ब्रह्मा की जयन्ती, ब्राह्मणों की जयन्ती। तो साथ-साथ बापदादा और बच्चे सभी की आदि रचना हुई और आदि से ही बाप के सहायोगी साथी बने। तो आप अपने साहयोगी साथियों से मिल रहे हैं। साथी अर्थात् हर कदम में, हर संकल्प में, बोल में साथ निभाने वाले। फालो करना अर्थात् साथ निभाना। ऐसे हर कदम में साथ निभाने वाले अर्थात् फालो फादर करने वाले सच्चे साथी हैं। अविनाशी साथी हैं। जो सच्चे साथी हैं-उन्हें का हर एक कदम स्वतः ही बाप समान चलता रहता है। यहाँ वहाँ हो नहीं सकता। सच्चे साथी को मेहनत नहीं करनी पड़ती। यह कदम ऐसे उठाऊं वा वैसे उठाऊं। स्वतः ही बाप के कदम ऊपर कदम रखने के सिवाए जरा भी यहाँ वहाँ हो नहीं सकता। ऐसे सच्चे साथी बच्चों के मन में, बुद्धि में, दिल में क्या समाया हुआ है? मैं बाप का, बाप मेरा। बुद्धि में है जो बाप का बेहद के खजानों का वर्सा है वह मेरा। दिल में दिलाराम और दिल। और कुछ हो नहीं सकता। तो जब बाप ही याद रूप में समाया हुआ है तो जैसी स्मृति वैसी स्थिति और वैसे ही कर्म स्वतः ही होते हैं। जैसे भक्ति मार्ग में भी भक्त निश्चय दिखाने के लिए यही कहते हैं कि देखो हमारे दिल में कौन है! आप कहते नहीं हो लेकिन स्वतः ही आपके दिल से दिलाराम ही सभी को अनुभव होता अर्थात् दिखाई देता है। तो सच्चे साथी हर कदम में बाप समान मास्टर सर्वशक्तिवान हैं।

आज बापदादा बच्चों को बधाई देने आये हैं। सभी सहयोगी साथी बच्चे अपने-अपने उमंग उत्साह से याद में, सेवा में आगे बढ़ते जा रहे हैं। हरेक के मन में एक ही दृढ़ संकल्प है कि विजय का झण्डा लहराना ही है। सारे विश्व में एक रूहनी बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने वाला ही है। जिस ऊंचे झण्डे के नीचे सारे विश्व की आत्मायें यह गीत गायेंगी कि एक बाप आ गया। जैसे अभी आप लोग झण्डा लहराते हो तो सभी झण्डे के नीचे गीत गाते हो और फिर क्या होता है! झण्डा लहराने से सभी के ऊपर फूलों की वर्षा होती है। ऐसे सभी की दिल से यह गीत स्वतः ही निकलेगा। सर्व का एक बाप। गति सद्गति दाता एक बाप। ऐसे गीत गाते ही अविनाशी सुख शान्ति का वर्सा, पुष्पों की वर्षा समान अनुभव करेंगे। बाप कहा और वर्से का अनुभव किया। तो सबके मन में यह एक ही उमंग उत्साह है। इसलिए बापदादा बच्चों के उमंग उत्साह पर बच्चों को बधाई देते हैं। विदाई तो नहीं देंगे ना। बधाई। संगमयुग का हर समय बधाई का समय है। तो मन की लगन पर, सेवा की लगन पर बापदादा सभी बच्चों को बधाई दे रहे हैं। सेवा में सदा आगे बढ़ने का सभी का उमंग है। ऐसा कोई नहीं होगा जिसको सेवा में आगे बढ़ने का उमंग न हो। अगर उमंग नहीं होता तो यहाँ कैसे आते! यह भी उमंग की निशानी है ना! उमंग उत्साह है और सदा रहेगा। साथ-साथ उमंग उत्साह से आगे बढ़ते हुए सेवा में सदा निर्विघ्न हैं? उमंग उत्साह तो बहुत अच्छा है, लेकिन निर्विघ्न सेवा और विघ्न पार करते-करते सेवा करना, इसमें अन्तर है। निर्विघ्न अर्थात् न किसी के लिए विघ्न रूप बनते और न किसी विघ्न स्वरूप से घबराते। यह विशेषता उमंग उत्साह के साथ-साथ अनुभव करते हो? या विघ्न आते हैं? एक हैं विघ्न पाठ पढ़ाने आते दूसरा है विघ्न हिलाने आते हैं। अगर पाठ पढ़ाके पक्के हो गये तो वह विघ्न लगन में परिवर्तन हो जाते। अगर विघ्न में घबरा जाते हैं तो रजिस्टर में दाग पड़ जाता है। फर्क हुआ ना।

ब्राह्मण बनना माना माया को चैलेन्ज करना है कि विघ्न भले आओ। हम विजयी हैं। तुम कुछ कर नहीं सकते। पहले माया के फ्रेन्ड्स थे। अब चैलेन्ज करते हो तो मायाजीत बनेंगे। चैलेन्ज करते हो ना। नहीं तो विजयी किस पर बनते हो? अपने ऊपर? विजयी रतन बनते हो तो विजय माया पर ही प्राप्त करते हो ना! विजय माला में पिराये जाते हैं, पूजे जाते हो। तो मायाजीत बनना अर्थात् विजयी बनना है। ब्राह्मण बनना अर्थात् माया को चैलेन्ज करना। चैलेन्ज करने वाले खेल करते हैं। आया और गया। दूर से ही जान लेते हैं, दूर से ही भगा देते हैं। टाइम वेस्ट नहीं करते हैं। सेवा में तो सभी बहुत अच्छे हो। सेवा के साथ-साथ निर्विघ्न सेवा का रिकार्ड हो। जैसे पवित्रता का आदि से रिकार्ड रखते हो ना। ऐसा कौन है जो संकल्प में भी आदि से अब तक अपवित्र नहीं बने हैं। तो यह विशेषता देखते हो ना। सिर्फ इस एक पवित्रता की बात से पास विथ आनर तो नहीं होंगे। लेकिन सेवा में स्व स्थिति में, सम्पर्क, सम्बन्ध में, याद में, सभी में जो आदि से अब तक अचल हैं, हलचल में नहीं आये हैं, विघ्नों के वशीभूत नहीं हुए हैं। सुनाया ना कि न विघ्नों के वश होना है न स्वयं किसके आगे विघ्न रूप बनना है। इसकी भी मार्क्स जमा होती हैं। एक प्युरिटी दूसरा अव्यभिचारी याद। याद के बीच में जरा भी कोई विघ्न न हो। इसी रीति से सेवा में सदा निर्विघ्न हो और गुणों में सदा सन्तुष्ट हो और सन्तुष्ट करने वाले हो। सन्तुष्टता का गुण सभी गुणों की धारणा का दर्पण है। तो गुणों में सन्तुष्टता का स्व प्रति और दूसरों से

सर्टीफिकेट लेना होता। यह है पास विथ आनर की निशानी। अष्ट रत्नों की निशानी। सबमें नम्बर लेने वाले हो ना कि बस एक में ही ठीक हैं। सेवा में अच्छा हूँ। बधाई तो बापदादा दे ही रहे हैं। अष्ट बनना है, इष्ट बनना है। अष्ट बनेंगे तो इष्ट भी इतना ही महान बनेंगे। उसके लिए तीन बातें सारा वर्ष याद रखना और चेक करना। और यह तीनों ही बातें अगर जरा भी संकल्प मात्र में रही हुई हों तो विदाई दे देना। आज बधाई का दिन है ना। जब छुट्टी देते हो तो विदाई में क्या करते हो? (मिश्री, बादामी, इलायची देते हैं) उसमें तीन चीजें होती हैं। तो बापदादा को भी तीन चीजें देंगे ना। विदाई नहीं बधाई है तब तो मुख मीठा कराते हो। तो जैसे यहाँ तीन चीजें किसलिए देते हो? फिर जल्दी आने की याद रहेगी। बापदादा भी आज तीन बातें बता रहे हैं। जो सेवा में कभी-कभी विघ्न रूप भी बन जाती हैं। तो तीन बातों के ऊपर विशेष फिर से बापदादा अटेन्शन दिला रहे हैं। जिस अटेन्शन से स्वतः ही पास विद आनर बन ही जायेंगे।

एक बात-किसी भी प्रकार का हृद का लगाव न हो। बाप का लगाव और चीज है लेकिन हृद का लगाव न हो।

दूसरा-किसी भी प्रकार का स्वयं का स्वयं से वा किसी दूसरे से तनाव अर्थात् खींचातान नहीं हो। लगाव नहीं हो, माया से युद्ध के बजाए आपस में खींचातान न हो।

तीसरा-किसी भी प्रकार का कमजोर स्वभाव न हो। लगाव, तनाव और कमजोर स्वभाव। वास्तव में स्वभाव शब्द बहुत अच्छा है। स्वभाव अर्थात् स्व का भाव। स्व श्रेष्ठ को कहा जाता है। श्रेष्ठ भाव है, स्व का भाव है, आत्म अभिमान है। लेकिन भाव-स्वभाव, भाव-स्वभाव बहुत शब्द बोलते हो ना। तो यह कमजोर स्वभाव है। जो समय प्रति समय उड़ती कला में विघ्न रूप बन जाता है। जिसको आप लोग रायल रूप में कहते हो मेरी नेचर ऐसी है। नेचर श्रेष्ठ है तो बाप समान हैं। विघ्न रूप बनती है तो कमजोर स्वभाव है। तो तीनों शब्दों का अर्थ जानते हो ना। कई प्रकार के तनाव हैं तनाव का आधार है मैं-पन। मैंने यह किया। मैं यह कर सकती हूँ! मैं ही करूँगा! यह जो मैं-पन है यह तनाव पैदा करता है। 'मैं' यह देह अभिमान का है। एक है मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ। एक है मैं फलानी हूँ, मैं समझदार हूँ, मैं योगी हूँ, मैं ज्ञानी हूँ। मैं सेवा में नम्बर आगे हूँ। यह मैं-पन तनाव पैदा करता है। इसी कारण सेवा में कहाँ-कहाँ जो तीव्रगति होनी चाहिए वह तीव्र के बजाए धीमी गति हो जाती है। चलते रहते हैं लेकिन स्पीड नहीं हो सकती। स्पीड तीव्र करने का आधार है-दूसरे को आगे बढ़ता हुआ देख सदा दूसरे को बढ़ाना ही अपना बढ़ना है। समझते हो ना सेवा में क्या मैं-पन आता है। यह मैं-पन ही तीव्रगति को समाप्त कर देता है। समझा!

यह तीन बातें तो देंगे ना कि फिर साथ में ले जायेंगे। इसको कहा जाता है त्याग से मिला हुआ भाग्य। सदा बांटके खाओ और बढ़ाओ। यह त्याग का भाग्य मिला है। सेवा का साधन यह त्याग का भाग्य है। लेकिन इस भाग्य को मैं-पन में सीमित रखेंगे तो बढ़ेगा नहीं। सदा त्याग के भाग्य के फल को औरों को भी सहयोगी बनाए बांटके आगे बढ़ो। सिर्फ मैं, मैं नहीं करो, आप भी खाओ। बांटकर एक दो में हाथ मिलाते हुए आगे बढ़ो। अभी सेवा के बीच में यह वायब्रेशन दिखाई देते हैं। तो इसमें फराखदिल हो जाओ। इसको कहते हैं जो ओटे सो अर्जुन। एक दो को नहीं देखो। यह भी तो ऐसे करते हैं ना! यह तो होता ही है, लेकिन मैं विशेषता दिखाने के लिए निमित्त बन जाऊँ। ब्रह्मा बाप की विशेषता क्या रही! सदा बच्चों को आगे रखा। मेरे से बच्चे होशियार हैं। बच्चे करेंगे! इतने तक त्याग के भाग्य का त्याग किया। अगर कोई प्यार के कारण, प्राप्ति के कारण ब्रह्मा की महिमा करते थे तो उसको भी बाप की याद दिलाते थे। ब्रह्मा से वर्सा नहीं मिलेगा। ब्रह्मा का फोटो नहीं रखना है। ब्रह्मा को सब कुछ नहीं समझना। तो इसको कहा है त्याग के भाग्य का भी त्याग कर सेवा में लग जाना। इसमें डबल महादानी हो जाते। दूसरा आफर करे, स्वयं अपनी तरफ न खींचे। अगर स्वयं अपनी महिमा करते, अपनी तरफ। खींचते हैं तो उसको क्या शब्द कहते हैं! मुरलियों में सुना हैं ना। ऐसा नहीं बनना। कोई भी बात को स्वयं अपनी तरफ खींचने की खींचातान कभी नहीं करो। सहज मिले वह श्रेष्ठ भाग्य है। खींच के लेने वाला इसको श्रेष्ठ भाग्य नहीं कहेंगे। उसमें सिद्धि नहीं होती। मेहनत ज्यादा सफलता कम। क्योंकि सभी की आशीर्वाद नहीं मिलती है। जो सहज मिलता है उसमें सभी की आशीर्वाद भरी हुई है। समझा-

तनाव क्या है! लगाव को तो उस दिन स्पष्ट किया था। कोई भी कमजोर स्वभाव न हो। ऐसे भी नहीं समझो मैं तो इस देश के रहने वाला हूँ। इसलिए मेरा स्वभाव, मेरा चलना मेरा रहना ऐसा है, नहीं। देश के कारण, धर्म के कारण, संग के कारण ऐसा मेरा स्वभाव है। यह नहीं। आप कौन से देश वाले हो! यह तो सेवा के लिए निमित्त स्थान मिले हैं। न कोई विदेशी है, न यह नशा हो कि मैं भारतवासी हूँ। सभी एक बाप के हैं। भारतवासी भी ब्राह्मण आत्मायें हैं। विदेश में रहने वाले भी ब्राह्मण आत्मायें हैं। अन्तर नहीं है। ऐसे नहीं भारतवासी ऐसे हैं। विदेशी ऐसे हैं। यह शब्द भी कभी नहीं बोलो। सब ब्राह्मण आत्मायें हैं। यह तो सेवा के लिए स्थान है। सुनाया था ना कि आप विदेश में क्यों पहुँचे हो? वहाँ क्यों जन्म लिया? भारत में क्यों नहीं लिया? वहाँ गये हो सेवा स्थान खोलने के लिए। नहीं तो भारतवासियों को वीसा का कितना प्राबलम है। आप सब तो सहज रहे पड़े हो। कितने देशों में सेवा हो रही है! तो सेवा के लिए विदेश में गये हो। बाकी हो सभी ब्राह्मण आत्मायें। इसलिए कोई भी किसी आधार में स्वभाव नहीं बनाना। जो बाप का स्वभाव वह बच्चों का स्वभाव। बाप का स्वभाव क्या है? सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का

स्वभाव। हर एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव। निर्माणता का स्वभाव। मेरा स्वभाव ऐसा है यह कभी नहीं बोलना। मेरा कहाँ से आया। मेरा तेज़ बोलने का स्वभाव है, मेरा आवेश में आने का स्वभाव है। स्वभाव के कारण हो जाता है। यह माया है। कईयों का अभिमान का स्वभाव, ईर्ष्या का, आवेश में आने का स्वभाव होता है, दिलशिकस्त होने का स्वभाव होता है। अच्छा होते भी अपने को अच्छा नहीं समझते। सदैव अपने को कमजोर ही समझेंगे। मैं आगे जा नहीं सकती। कर नहीं सकती। यह दिलशिकस्त स्वभाव यह भी रांग है। अभिमान में नहीं आओ। लेकिन स्वमान में रहो तो इसी प्रकार के स्वभाव को कहा जाता है कमजोर स्वभाव। तो तीनों बातों का अटेन्शन सारा वर्ष रखना। इन तीनों बातों से सेफ रहना है। मुश्किल तो नहीं है ना। साथी आदि से अन्त तक सहयोग साथी है। साथी तो समान चाहिए ना। अगर साथियों में समानता नहीं होगी तो साथी प्रीत की रीति निभा नहीं सकते। अच्छा यह तो ३ बातें अटेन्शन में रखेंगे। लेकिन इन तीन बातों से सदा किनारा करने के लिए और ३ बातें याद रखनी हैं। आज तीन का पाठ पढ़ा रहे हैं। सदा अपने जीवन में-एक बैलेन्स रखना है। सब बात में बैलेन्स हो। याद में, सेवा में बैलेन्स। स्वमान अभिमान को समाप्त करता। स्वमान में स्थित रहना। यह सब बातें स्मृति में रहे। ज्यादा रमणीक भी नहीं, ज्यादा गम्भीर भी नहीं। बैलेन्स हो। समय पर रमणीक, समय पर गम्भीर। तो एक है बैलेन्स। दूसरा सदा अमृतवेले बाप से विशेष ब्लैसिंग लेनी है! रोज़ अमृतवेले बापदादा बच्चों प्रति ब्लैसिंग की झोली खोलते हैं। उससे जितना लेने चाहो उतना ले सकते हो। तो बैलेन्स, ब्लैसिंग तीसरा ब्लिसफुल लाइफ।। तीनों बातें स्मृति में रहने से वह तीनों बातें जो अटेन्शन देने की हैं, वह स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी। समझा! अच्छा और तीन बातें सुनो-

लक्ष्य रूप में वा धारण के रूप में विशेष तीन बातें ध्यान में रखनी हैं। वह छोड़नी हैं और वह धारण करनी है। छोड़ने वाली तो छोड़ दी ना सदा के लिए। उसको याद करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। लेकिन यह तीन बातें जो सुनाई यह स्मृति में रखना और धारणा स्वरूप में विशेष याद रखना। एक-सब बातों में रीयल्टी हो। मिक्स नहीं। इसको कहते हैं-रीयल्टी। संकल्प में, बोल में, सब बात में रीयल। सच्ची दिल पर साहेब राजी। सच की निशानी क्या होगी? सच तो बिठो नच। जो सच्चा होगा वह सदा खुशी में नाचता रहेगा। तो एक रीयल्टी दूसरा रायल्टी। छोटी-छोटी बात में कभी भी बुद्धि झुकाव में न आवे। जैसे रायल बच्चे होते हैं तो उन्हीं की कब छोटी-सी चीज पर नज़र नहीं जायेगी। अगर नज़र गई तो उसको रायल नहीं कहा जाता। किसी भी छोटी-छोटी बातों में बुद्धि का झुकाव हो जाए तो उसको रायल्टी नहीं कहा जाता। जो रायल होता है वह सदा प्राप्ति स्वरूप होता है। कहाँ आँख वा बुद्धि नहीं जाती। तो यह है रूहानी रायल्टी। कपड़ों की रायल्टी नहीं। तो रीयल्टी, रायल्टी और तीसरा युनिटी। हर बात में, संकल्प में, बोल में, कर्म में भी सदा एक दो में युनिटी दिखाई दे। ब्राह्मण माना ही एक। लाख नहीं, एक। इसको कहा जाता है युनिटी। वहाँ अनेक स्थिति के कारण एक भी अनेक हो जाते। और यहाँ अनेक होते भी एक हैं। इसको कहा जाता है युनिटी। दूसरे को नहीं देखना है। हम चाहते हैं युनिटी करें लेकिन यह नहीं करते हैं। अगर आप करते रहेंगे तो उसको डिसयुनिटी का चांस ही नहीं मिलेगा। कोई हाथ ऐसे करता, दूसरा न करे तो आवाज नहीं होगा। अगर कोई डिसयुनिटी का कोई भी कार्य करता है, आप युनिटी में रहो तो डिसयुनिटी वाले कब डिसयुनिटी का काम कर नहीं सकेंगे। युनिटी में आना ही पड़ेगा। इसलिए तीन बातें-रीयल्टी, रायल्टी और युनिटी। यह तीनों ही बातें सदा बाप समान बनने में सहयोगी बनेंगी। समझा-आज तीन का पाठ पढ़ लिया ना। बाप को तो बच्चों पर नाज़ है। इतने योग्य बच्चे और योगी बच्चे किसी बाप के हो ही नहीं सकते। योग्य भी हो, योगी भी हो और एक-एक पदमापदम भाग्यवान हो। सारे कल्प में इतने और ऐसे बच्चे हो ही नहीं सकते। इसलिए विशेष अमृतवेले का टाइम बापदादा ने क्यों रखा है-ब्राह्मण बच्चों के लिए। क्योंकि विशेष बापदादा हर बच्चे की विशेषता को, सेवा को, गुण को सदा सामने लाते हैं। और क्या करते हैं? जो हर बच्चे की विशेषता है, गुण है, सेवा है, उसको विशेष वरदान से अविनाशी बनाते हैं। इसलिए खास यह समय बच्चों का रखा है। अमृतवेले की विशेष पालना है। हर एक को बापदादा स्नेह के सहयोग की वरदान की पालना देते हैं। समझा क्या करते हैं और आप लोग क्या करते हो। शिवबाबा सुखदाता है, शान्ति दाता है...ऐसे कहते हो ना। और बाप पालना देते हैं। जैसे माँ बाप बच्चों को सवेरे तैयार करते साफ सुथरा करके फिर कहते अब सारा दिन खाओ पियो पढ़ो। बापदादा भी अमृतवेले यह पालना देते अर्थत् सारे दिन के लिए शक्ति भर देते हैं। विशेष पालना का यह समय है। यह एकस्ट्रा वरदान का, पालना का समय है। अमृतवेले वरदानों की झोली खुलती है। जितना जो वरदान लेने चाहे सच्ची दिल से, मतलब से नहीं। जब मतलब होगा तब कहेंगे हमको यह दो, जो मतलब से मांगता है तो बापदादा क्या करते हैं! उनका मतलब सिद्ध करने के लिए उतनी शक्ति देता है, मतलब पूरा हुआ और खत्म। फिर भी बच्चे हैं, ना तो नहीं करेंगे। लेकिन सदा ही वरदानों से पलते रहो, चलते रहो, उड़ते रहो उसके लिए जितना अमृतवेला शक्तिशाली बनायेंगे उतना सारा दिन सहज होगा। समझा।

अभी इस वर्ष गोल्डन जुबली की तैयारी तो कर रहे हो- लेकिन इस वर्ष में हर एक सेवाकेन्द्र पर और क्या विशेषता करो वह बता रहे हैं। गोल्डन जुबली तो करनी है वह नहीं भूल जाना लेकिन साथ-साथ बापदादा सभी स्थानों का चक्र लगाते, क्लासेज़ देखते हैं। रेग्युलर स्टूडेंट देखते हैं, कभी-कभी आने वाले देखते, सम्पर्क वाले देखते। यह सब देखते हुए इस वर्ष यह लक्ष्य रखो कि हर

सेन्टर पर, हर प्रकार की वैराइटी होनी चाहिए। वकील भी हो, जज भी हो, डाक्टर भी हो, साइन्स वाला आदि...सब होने चाहिए। सभी धर्म वाले भी होने चाहिए। सब प्रकार की वैराइटी ज्यादा में ज्यादा जितनी भी हो लेकिन कम से कम एक भी आक्यूपेशन वाले सब वैराइटी हर स्थान पर होनी चाहिए। स्टूडेंट भी हो तो बूढ़ा भी हो, युवा भी हो, बच्चा भी हो। सब प्रकार की वैराइटी होनी चाहिए। प्रवृत्ति वाले युगल भी होने चाहिए। जैसे आप लोग रिजल्ट निकालते हो एक तो आयु के हिसाब से वैराइटी निकालते हो। दूसरा सेवा के हिसाब से वर्ग निकालते हो। एक भी आक्यूपेशन वाला कम न हो। इसको कहा जाता है वैराइटी प्रकार का गुल-दस्ता। एक भी रंग रूप का पुष्प कम न हो। हर एक सेवाकेन्द्र ऐसी संख्या सब प्रकार की बढ़ाओ। जितना बढ़ाओ उतना नम्बर आगे हो। इस वर्ष में ऐसे वैराइटी प्रकार के स्टूडेंट तैयार करो। कोई जिस भी क्लास में जावे तो उनको सब प्रकार के आक्यूपेशन वाले दिखाई दें। और वह एक फिर अपने हमजिन्स की सेवा जरूर करे तो संख्या भी बढ़ जायेगी और वैराइटी भी होगी। बाकी वी.आई.पी. की सर्विस तो करते ही हो। उसमें भी एडीशन। बापदादा ने सुनाया था-सिर्फ सुनने लिए नहीं आवें लेकिन लेने लिए आवें। बन करके जावें। सिर्फ सुना बहुत अच्छा लगा। नहीं। कुछ लेके जा रहा हूँ। बनकर के जा रहा हूँ। वी.आई.पी. की सेवा तो जितना बढ़ाते रहेंगे उतना आवाज़ बुलन्द होता जायेगा। धीरे-धीरे आवाज बुलन्द हो रहा है लेकिन एक तरफ का एक आवाज बड़ा आता है। सब तरफ नहीं होता है। तो एक तरफ का आवाज छिप जाता है। चारों तरफ से बुलन्द आवाज होगा तो विजय का नगाड़ा। बज जायेगा। जब विजय का नगाड़ा बजाते हैं तो चारों तरफ चक्कर लगाते हैं। चारों तरफ आवाज फैलता है। तो समझा सेवा में क्या करना है। स्वस्थिति और सेवा के उन्नति। स्व स्थिति ही सेवा की उन्नति के लिए सहज सिद्धि वा सहज साधन है। स्व की उन्नति के बिना सेवा की उन्नति अविनाशी, निर्विघ्न नहीं बनेगी। इसलिए दोनों का बैलेन्स हो। स्व उन्नति को छोड़ सिर्फ सेवा की उन्नति नहीं करो। साथ-साथ करो। नहीं तो जिनके निमित्त बनते हैं वह भी कमजोर होते। उन्हीं को भी बहुत मेहनत करनी पड़ती। इसलिए स्व उन्नति, सेवा की उन्नति सदा ही साथ रखते हुए उड़ते चलो। अच्छा-

सदा स्वयं को पास विद आनर बनने के लक्ष्य और लक्षण में चलाने वाले, सदा स्वयं को ब्रह्मा बाप समान त्याग का भाग्य बांटने वाले, नम्बरवन त्यागी श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले, सदा सहज प्राप्ति के अधिकारी बन स्व उन्नति और सेवा की उन्नति करने वाले, सदा हर कदम में सहयोगी, साथी बन आगे बढ़ने वाले, स्मृति, स्थिति शक्तिशाली बनाने से सदा बाप को फालो करने वाले, ऐसे सदा सहयोगी साथी, फरमानबरदार, आज्ञाकारी, सन्तुष्ट रहने वाले, सर्व को राजी करने के राज को जानने वाले, ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को, महान पुण्य आत्माओं को, डबल महादानी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।”

बड़ी दादियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

आदि से अब तक जो हर कार्य में साथ चलते आ रहे हैं, उन्हीं की यह विशेषता है-जैसे ब्रह्मा बाप हर कदम में अनुभवी बन अनुभव की अथार्टी से विश्व के राज्य की अथार्टी लेते हैं ऐसे ही आप सभी भी बहुतकाल के हर प्रकार के अनुभव की अथार्टी के कारण बहुतकाल के राज्य की अथार्टी में भी साथी बनने वाले हो। जिन्होंने आदि से संकल्प किया-जहाँ बिठायेगे, जैसे चलायेगे वैसे चलते हुए साथ चलेगे। तो साथ चलने का पहला वायदा बापदादा को निभाना ही पड़ेगा। ब्रह्मा बाप के भी साथ रहने वाले हो। राज्य में भी साथ रहेंगे, भक्ति में भी साथ रहेंगे। जितना अभी बुद्धि से सदा का साथ रहता है उसी हिसाब से राज्य में भी सदा साथ हैं। अगर अभी थोड़ा-सा दूर तो कोई जन्म में दूर के हो जायेंगे। कोई जन्म में नजदीक के। लेकिन जो सदा ही बुद्धि से साथ में रहते हैं, वह वहाँ भी साथ-साथ रहेंगे। साकार में तो आप सब १४ वर्ष साथ रहे, संगमयुग के १४ वर्ष कितने वर्षों के समान हो गये। संगमयुग का इतना समय साकार रूप में साथ रहे हो, यह भी बहुत बड़ा भाग्य है। फिर बुद्धि से भी साथ हो, घर में भी साथ होंगे, राज्य में भी साथ होंगे। भले तख्त पर थोड़े बैठते हैं लेकिन रायल फैमली के नजदीक सम्बन्ध में, सारे दिन की दिनचर्या में साथ रहने में पार्ट जरूर बजाते हैं। तो यह आदि से साथ रहने का वायदा सारा कल्प ही चलता रहेगा। भक्ति में भी काफी समय साथ रहेंगे। यह पीछे के जन्म में थोड़ा-सा कोई दूर कोई नजदीक लेकिन फिर भी साथ सारा कल्प किसी न किसी रूप से रहते हैं। ऐसा वायदा है ना! इसलिए आप लोगों को सभी किस नज़र से देखते हैं! बाप के रूप हो। इसी को ही भक्ति में उन्हींने कहा है यह सब भगवान के रूप हैं! क्योंकि बाप समान बनते हो ना! आपके रूप से बाप दिखाई देता है इसलिए बाप के रूप कह देते हैं। जो बाप के सदा साथ रहने वाले हैं उनकी यही विशेषता होगी, उनको देखकर बाप याद आयेगा, उनको नहीं याद करेंगे लेकिन बाप को याद करेंगे। उन्हीं से बाप के चरित्र, बाप की दृष्टि, बाप के कर्म सब अनुभव होंगे। वह स्वयं नहीं दिखाई देंगे लेकिन उन द्वारा बाप के कर्म वा दृष्टि अनुभव होगी। यही विशेषता है अनन्य, समान बच्चों की। सभी ऐसे हो ना! आप में तो नहीं फँसते हैं ना! यह तो नहीं कहते फलानी बहुत अच्छी है, नहीं। बाप ने इन्हें अच्छा बनाया है। बाप की दृष्टि, बाप की पालना इन्हें से मिलती है। बाप के महावाक्य इन्हें से सुनते हैं। यह विशेषता है। इसको कहा जाता है प्यारा भी लेकिन न्यारा भी। प्यारा भले सबका हो लेकिन फँसानेवाला नहीं हो। बाप के बदले आपको याद न करें। बाप की शक्ति लेने के लिए बाप के महावाक्य सुनने के लिए आपको याद करें। इसको कहते हैं प्यारा भी और न्यारा भी। ऐसा गुप है ना। कोई तो विशेषता होगी ना जो साकार की पालना ली है-विशेषता तो होगी ना। आप लोगों

के पास आयेंगे तो क्या पूछेंगे-बाप क्या करता था, कैसे चलता था...यही याद आयेगा ना। ऐसी विशेष आत्मायें हो। इसको कहते हैं डिवाइन युनिटी। डिवाइन की स्मृति दिलाए डिवाइन बनाते, इसलिए डिवाइन युनिटी। ५० वर्ष अविनाशी रहे हो तो अविनाशी भव की मुबारक हो। कई आये कई चक्र लगाने गये। आप लोग तो अनादि अविनाशी हो गये। अनादि में भी साथ आदि में भी साथ। वतन में साथ रहेंगे तो सेवा कैसे करेंगे! आप तो थोड़ा-सा आराम भी करते हो, बाप को आराम की भी आवश्यकता नहीं। बापदादा इससे भी छूट गये। अव्यक्त को आराम की आवश्यकता नहीं। व्यक्त को आवश्यकता है। इसमें आपसमान बनायें तो काम खत्म हो जाए। फिर भी देखो जब कोई सेवा का चांस बनता है तो बाप समान अथक बन जाते हो। फिर थकते नहीं हो।

अच्छा-

दादीजी से-बचपन से बाप ने ताजधारी बनाया है। आते ही सेवा की जिम्मेवारी का ताज पहनाया और समय प्रति समय जो भी पार्ट चला चाहे बेगरी पार्ट चला, चाहे मौजों का पार्ट चला, सभी पार्ट में जिम्मेवारी का ताज ड्रामा अनुसार धारण करती आई हो। इसलिए अव्यक्त पार्ट में भी ताजधारी निमित्त बन गई। तो यह विशेष आदि से पार्ट है। सदा जिम्मेवारी निभाने वाली। जैसे बाप जिम्मेवार है तो जिम्मेवारी के ताजधारी बनने का विशेष पार्ट है। इसलिए अन्त में भी दृष्टि द्वारा ताज, तिलक सब देकर गये। इसलिए आपका जो यादगार है ना उसमें ताज जरूर होगा। जैसे कृष्ण को बचपन से ताज दिखाते हैं तो यादगार में भी बचपन से ताजधारी रूप से पूजते हैं। और सब साथी हैं लेकिन आप ताजधारी हो। साथ तो सभी निभाते लेकिन समान रूप में साथ निभाना। इसमें अन्तर है।

विदाई के समय सभी बच्चों को यादप्यार-सभी तरफ के स्नेही सहयोगी बच्चों को बापदादा का विशेष स्नेह सम्पन्न यादप्यार स्वीकार हो। आज बापदादा सभी बच्चों को सदा निर्विघ्न बन, विघ्न विनाशक बन विश्व को निर्विघ्न बनाने के कार्य की बधाई दे रहे हैं। हर बच्चा यही श्रेष्ठ संकल्प करता है कि सेवा में सदा आगे बढ़ें, यह श्रेष्ठ संकल्प सेवा में सदा आगे बढ़ रहा है और बढ़ता रहेगा। सेवा के साथ-साथ स्वउन्नति और सेवा की उन्नति का बैलेन्स रख आगे बढ़ते चलो तो बापदादा और सर्व आत्माओं द्वारा जिन्हों के निमित्त बनते हो उन्हों के दिल की दुआयें प्राप्त होती रहेंगी। तो सदा बैलेन्स द्वारा ब्लैसिंग लेते हुए आगे बढ़ते चलो। स्वउन्नति और सेवा की उन्नति दोनों साथ-साथ रहने से सदा और सहज सफलता स्वरूप बन जायेंगे। सभी अपने-अपने नाम से विशेष यादप्यार स्वीकार करना।

अच्छा-ओम् शान्ति